हमारी प्रातःकालीन सभा

परिचय– प्रार्थना (assembly) पर अक्सर लोगों को चर्चा करते सुना है। जहाँ एक तरफ समझदार कहे जाने वाले बड़े बुजुर्ग या गुरूजन इसके पक्ष में दलील देते हैं। वहीं विद्यार्थीगण इससे बचकर भागते देखे जाते हैं। कभी इस विषय पर खुलकर कोई चर्चा नही हुई। यह लेख इसी बात की पड़ताल करता है। इस लेख में हम अलग–अलग विचार और प्रयासों को संक्षित में जानने का प्रयास करेंगे।

देखा जाता है कि सभी तरह की शिक्षण संस्थाओं में दिन की शुरूआत कुछ विशेष तरह कि गतिविधियों के साथ की जाती हैं। मसलन विद्यालय के सभी बच्चों को एक स्थान पर सीधी लाईनो में खड़ा करके प्रार्थना, राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान, प्रतिज्ञा करवाना। कुछ विद्यालयों में इनके अतिरिक्त सूचना/समाचार, पहेली और व्यायाम (पी.टी.) भी करवाये जाते हैं। यह पूरा कार्य 30 से 45 मिनट का होता है।

विद्यालयों में इस कार्य को अलग–अलग नाम से संबोधित किया जाता है। अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में Assembly (असेंबली) कहा जाता है। जिसका हिन्दी में अर्थ सभा होता है। पर देखा जाता है कि अधिकांश विद्यालयों में इसे प्रार्थना या प्रार्थना सभा के नाम से संबोधित किया जाता है। शिक्षकों, बच्चों, अभिभावकों और संबंधित अधिकारियों से जब भी यह पूछा जाता है–

बच्चों में जिम्मेदारी व नेतृत्व को बढ़ावा देने के लिये सरपंच की तरह अध्यक्ष और सदस्यों का चुनाव बच्चों के द्वारा होता है। लेकिन स्कूल में अध्यक्ष और सदस्य किसी भी समस्या पर बिना किसी की राय के निर्णय नहीं ले सकते है क्योंकि निर्णय लेने का हक सभी बच्चों एवं शिक्षकों का भी होता है। स्कूल पंचायत बाल बुक तथा समाचार पत्रिका (उदय पत्रिका) के संपादक के रूप में कार्य करती है। प्रत्येक गांव के लिए दो–दो पत्रकार होते है, जो आस–पास के तथा गांव के समाचार सम्पादक मण्डल को देते है। यह कमेटी इन समाचारों से उदय पत्रिका निकालती है। इसी प्रकार बच्चों द्वारा लिखित कहानी, कविता, चित्र, चुटकुलों को भी बाल बुक में लिखा जाता है, एवं समूह में पढा जाता है इस प्रकार सभा में बच्चों को आनंद मिलता है और उनकी रचनात्मक कलाओं को बढावा भी मिलता है।

अक्सर विद्यालय अवलोकन के लिये आने वाले आगन्तुक सभा में की गई प्रस्तुतियों को बच्चों के शिक्षण से जोड़ते हुए स्थानिय गीतों कहानियों में सामाजिक समस्याओं का जिक्र करते है। जिनमें सामाजिक विभाजन, हिंसा, जेंडर, भेदभाव के मुद्दे निकलकर आते हैं। हमारा कहना होता है कि बच्चे अगर ऐसी प्रस्तुति करते हैं तो वह उनके अनुभव और परिवेश को प्रस्तुत करती है। हम उसे एक अवसर की तरह लेकर उस पर समझ बनाने, चर्चा करने का काम करते हैं ताकि बच्चों में अपने आस–पास की चीजों को तर्क के

सभा में कहानियां भी बच्चों की सुनी हुई, पढ़ी हुई या उन्ही के द्वारा लिखित होती है, जिसे बच्चों या शिक्षकों द्वारा सुनाया जाता है, साथ ही कहानियों पर नाटक भी किया जाता है। इसमें बच्चे स्वयं पात्र तय करके नाटक का मंचन करते है जिससे उनकी स्वभावगत विशेषताएं भी देखने को मिल जाती है।

बौद्धिक खेलों में पहेलियां तथा मूकाभिनय को भी शामिल किया जाता है। बच्चे अपनी रोजमर्रा के काम में लाई जाने वाली अथवा स्वयं द्वारा रचित नई पहेलियों को समूह में रखते है, इन पहेलियों का जवाब या तो समूह देता है या फिर अगले दिन वे स्वयं देते है, इस प्रकार बच्चे प्रत्येक दिन एक बाल बुक बनाते है जिसे सभा में सबके सामने पढ़ा जाता है। इसमें (बाल बुक) बच्चों द्वारा रचित कहानियॉ, कविताएँ एवं पहेलियॉ होती है। सभा में बच्चों के द्वारा संचालित समाचार पत्र को भी पढा जाता है जिससे बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति में सुधार होता है। नये शब्दों से परिचय होने से उनका शब्दकोष भी बढता है। शब्दों की ध्वनि, उतार–चढ़ाव, उच्चारण के साथ–साथ शब्दों के अर्थ को हाव–भाव और सन्दर्भ से समझने में मदद मिलती है। गाना गाने, नाचने, ढोलक बजाने जैसी कलाओं का भी विकास होता है

सभा में व्यवस्था संबंधी चर्चा भी होती है और इन चर्चाओं में सभी बच्चे एवं शिक्षक भाग लेते है और चर्चा के अन्त में सभी का एक मत होता है। जिसे अंतिम निर्णय के रूप में लिया जाता है।

- सभा/प्रार्थना क्यों की जाती है?
- इससे बच्चों में क्या सुधार आता है?
- इससे बच्चों की शिक्षा में क्या मदद मिलती है?

उनकी तरफ से बताया जाता है कि प्रार्थना से दिन अच्छा गुजरता है। तन मन शुद्ध हो जाता है। बच्चों को ज्ञान, समझ, अच्छे संस्कार और गुण प्राप्त होते हैं। राष्ट्र के प्रति सम्मान और सेवा की भावना जागती है। ज्यादा बात करने पर बात परम्परा पर आकर खत्म हो जाती है कि हमेशा से ऐसा ही होता आ रहा है। राजकीय और निजी विद्यालयों में प्रार्थना/सभा को जितनी कड़ाई और तत्परता से लागू किया जाता है। वैसा शायद ही दिन के किसी और सत्र में देखने को मिलता हो। बच्चों से बात करने पर पता चलता है कि उनका बस चले तो वो प्रार्थना में आये ही नही। देखने में आता है कि प्रार्थना में बच्चों को अलग–अलग कारणों से दण्डित किया जाता है जैसे– लेट आने पर, स्कूल ड्रेस नही होने पर, होमवर्क नही करने पर, कक्षा की कोई बात या गलती पर, आपस में बाते करने पर, सीधा खड़ा नही होने पर। स्कूल फीस नहीं भरने पर। इन सब बातों को जानने पर यह समझना आसान हो जाता है कि विद्यालय दिन की शुरूआत में ही बच्चों के उत्साह और जोश को खत्म कर देता है। बच्चों के सीखने की शुरूआत अगर इस प्रकार हो तो कोन बच्चा सभा में आना चाहेगा।

उदय सामुदायिक पाठशाला में सभा का अर्थ – विद्यालय में होने वाली सभा विद्यालय की कार्यप्रणाली, शिक्षा से संबंधित मान्यताओं, विश्वासों, मूल्यों, आपसी संबंधों के साथ–साथ किये जाने वाले कार्यो की जीवंत प्रस्तुति होती है। हमारा मानना है कि सभा बच्चों और शिक्षकों को प्रभावित करने व प्रोत्साहित करने का एक शक्तिशाली माध्यम होती है। इसके निम्न प्रमुख उद्देश्य हैं –

- आनन्दायी वातावरण का निर्माण करना।
- विद्यालय समुदाय का निर्माण करना।
- लोकतांत्रिक प्रक्रिया की नीव रखना।
- अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना।
- स्थानिय गतिविधियों का प्रदर्शन व अपने परिवेश से जुड़ना।
- अपनी क्षमताओं की प्रस्तुति का अवसर देना।
- आत्मविश्वास बढ़ाना।
- सामूहिक भागीदारी के अवसर प्रदान करना।
- दूसरी कक्षाओं के बच्चों के साथ आपसी ताल–मेल से सामाजिक ताने–बाने को समझने के अवसर देना।
- समस्याओं और चुनौतियों को समझने और समाधान के अवसर देना।
- जानकारी और ज्ञान को आपस में साझा करने के अवसर देना।

"उदय सामुदायिक पाठशाला" में बच्चे सुबह उत्साह से दौड़ते हुए आते हैं। उनके कंधे बिना बस्ते के तने हुए, सीना शुद्ध हवा से फूला हुआ और चेहरे खुशी से खिले होते हैं। कोई भी बच्चा सभा से वंचित नहीं रहना चाहता। बच्चे और शिक्षक मिलकर अपनी

पाठशाला की वैसे ही देखभाल करते हैं जैसे– कोई अपने घर की करता है। बच्चे, शिक्षक व अन्य सभी समान रूप से एक मंच पर आलती–पालती लगाकर बैठते हैं। यहॉ शिक्षक और बच्चे मिलकर बाल सभा की तैयारी करते है। हर बच्चा गतिविधि को देख सके और उसमें ठीक से भाग ले सके इसके लिये गोल घेरा बनाकर बैठते हैं। बच्चे ज्यादा हो तो घेरों की संख्या बड़ा दी जाती है। उपस्थित सदस्यों में से कोई भी एक गुंजन करने का निर्देश देता है और सब गुंजन करने लगते हैं। इस समय कोई भी किसी को निर्देशित नहीं करता। चारों तरफ भंवरे की गूंज सुनाई देती है। अब सभी मानसिंक रूप से सभा की अगली गतिविधि के लिये तैयार हो जाते हैं। सभा बच्चों की रूचियों को ध्यान में रखकर ही होती है, ताकि दिनभर एक खुशनुमा माहौल बना रहे और बच्चे हंसते खेलते रहे। सभा में कहानी , नाटक, बालगीत तथा कुछ बौद्धिक खेल होते है, जिसमें बच्चे अपनी पूरी रूचि दिखाते है और आनंद महसूस करते है। बालगीत सामान्यतः बच्चों की समझ में आने लायक होते है, ये वो गीत होते है जिसे वे बचपन से ही गाते आए है और उदय में इन गीतों को ताल और लय के साथ गाने में उन्हें और भी आनंद मिलता है। इन गीतों के साथ ही वे अन्य गीतों को भी सीखते हैं। इन्हें पूरे हावभाव के साथ गाते हुए इनका आनंद लेते है। शिक्षक बच्चों की तरह ही हर गतिविधि में भागीदार रहते हैं। 3 साल के छोटे बच्चों को उत्साह के साथ भाग लेते देखना मन को आनन्दित करता है।

आधार पर देखने और समझने की क्षमता विकसित हो सके।

कई लोग हमसे कहते है कि हमारे यहाँ सब कुछ अच्छा है पर प्रार्थना तो हुई नही। विद्यालय में किसी देवी–देवता की तस्वीर भी नहीं है? हमारा कहना है कि शिक्षण की शुरूआत सरल, दिखनेवाली व समझ में आने वाली चीजों से की जाये जो बच्चों को बढ़िया समझ में आता है। देवी–देवता या धर्म को जानना और समझना शुरू में बहुत कठिन होता है। ये हमारी आस्था और विश्वास से जुड़े हुए हैं। इनकी शिक्षा एक उम्र के बाद जब बच्चे समझने लगे तब होनी चाहिये। जिसे पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से पढ़ाया जाता है। जिसमें स्तर अनुसार बच्चे सभी धर्मों को जानने समझने का कार्य करते है।

निष्कर्ष– पूरी चर्चा के बाद कुछ बाते स्पष्ट होती हैं। स्कूलों में बच्चों को एक अच्छी बाल सभा की जरूरत है। एक ऐसी सभा जो बच्चों को आकर्षित करे, उन्हे उत्साह और आनन्द से भरे, उनके जानने–सीखने और और प्रस्तुत करने के सहज अवसर उपलबध करवा सके।

हमारी प्रातःकालीन सभा